THE RESEARCH JOURNAL OF ENVIRONMENT, CULTURE AND DEVELOPMENT (T.R.J.E.C.D.)
A Monthly International Journal of Multidisciplinary Research, Peer Reviewed-Refereed & Impact Factor - 4.8
ISSN : 2349-3313, Vol. : 10, No. : 8, January - 2025, Conference Special Issue Hindi

इको टूरिज्म : विकास के नये आयाम

Sumedha kumari
Assistant Professor, Department of commerce, Gopinath Singh Mahila Mahavidyalaya, Garhwa, Jharkhand

प्रस्तावना :– इको टूरिज्म जिसे परिस्थितिकी पर्यटन के रूप में भी जाना जाता है, यह एक ऐसा मॉडल है जो पर्यावरण की सुरक्षा, स्थानीय संस्कृति के संरक्षण और आर्थिक विकास को एक साथ लाने का प्रयास करता है। यह पर्यटन का एक ऐसा स्वरूप है, जो न केवल पर्यटकों को प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव करने का अवसर देता है, बल्कि स्थानीय समुदाय को भी लाभान्वित करता है। इको टूरिज्म पर्यटन का वह रूप है जिसमें सीखने के उद्देश्य से प्राकृतिक क्षेत्र की यात्रा करना शामिल है। यह प्राकृतिक दुनिया का दौरा करने और उसका अनुभव करने, संरक्षण स्थिरता को बढ़ावा देने और प्राकृतिक वातावरण को संरक्षित करने के विचार पर आधारित है। इको टूरिज्म का लक्ष्य पर्यटकों को प्राकृतिक दुनिया और पर्यावरण के बारे में गहरी समझ प्रदान करना है।

इको टूरिज्म में पर्यटन की एक विशेष श्रेणी है, जो आजीविका और संरक्षण को जोड़ती है। प्राकृतिक क्षेत्र की यात्रा अद्भुत परिदृ यों की खोज करने का एक शानदार अवसर है, लेकिन यह नाजुक परिस्थितियों प्रणालीयों को संरक्षित करने स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ प्रदान करने और संरक्षण प्रयासों को बढ़ावा देने में भी मदद कर सकता है। इको टूरिज्म की संभावनाओं को पूरी तरह से समझने के लिए न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव और स्थिर न्याय संगत आर्थिक विकास सर्वोपरि होना चाहिए। पर्यटन का यह रूप पर्यावरण संरक्षण और जिम्मेदार यात्रा प्रथाओं पर केंद्रित है। इसमें वन्य जीव का अवलोकन करने स्थानीय संस्कृति के बारे में जानने और प्रकृति की सुंदरता की सराहना करने के लिए राष्ट्रीय उद्यानों का दौरा करना शामिल है। और अगर आप आउटडोर उत्साही है, तो इको टूरिज्म में लंबी पैदल यात्रा, कैपिंग, पक्षी देखना और क्याकिंग जैसी गतिविधियां शामिल हो सकता हैं। इको टूरिज्म पर्यावरण उद्योग के लिए एक नया दृष्टिकोण है। पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता को प्रभावित किए बिना प्राकृतिक स्थान की यात्रा करना और स्थानीय समुदायों के लिए आर्थिक लाभ और कल्याण का अवसर प्रदान करना शामिल है।

पर्यटक पर्यावरण पर अपने प्रभाव को कम करते हुए प्राकृतिक का अन्वेषण करना चाहते हैं। इको टूरिज्म का एक मुख्य लाभ यह है, कि प्राकृतिक संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देकर प्रदूषण और अपशिष्ट को कम करता है। ऊर्जा की खपत को सीमित करके सौर ऊर्जा जैसी नवीकरणीय स्रोत का उपयोग करके और एकल उपयोग वाले प्लास्टिक से बचकर इकोटूरिस्ट पारिस्थितिकी तंत्र को और अधिक नुकसान से बचाने में मदद करते हैं। इकोटूरिज्म यात्रियों और समुदायों के लिए कई लाभ ला सकता है। यह पर्यटन स्थलों के पास रहने वाले लोगों को रोजगार प्रदान कर आय के अवसर पैदा कर स्थानीय अर्थव्यवस्था का समर्थन करने में मदद कर सकता है। दूसरी ओर इकोटूरिज्म को किसी संस्कृति के रीति–रिवाज, विश्वासों, भाषा और भोजन की आदतों के बारे में अच्छे से जानने का अवसर मिलता है। इससे यात्रियों को दुनिया भर के विभिन्न दृष्टिकोण की समझ हासिल करने में मदद मिलती है।

इकोटूरिज्म, जो टूरिज्म का संक्षिप्त रूप है, यात्रा के प्रति एक जिम्मेदार और टिकाऊ दृष्टिकोण है जो प्रमुख सिद्धांतों को प्राथमिकता देता है। इकोटूरिज्म का उद्देश्य प्राकृतिक पर्यावरण पर इसके प्रभाव को कम करना व जैव विविधता की रक्षा करना है। इससे पर्यटकों द्वारा जिम्मेदार व्यवहार के साथ–साथ नाजुक परिस्थितिकी तंत्र और वन्य जीव अवासो का संरक्षण शामिल है। इको टूरिज्म पर्यावरण शिक्षा को प्रोत्साहित करता है और यात्रियों के बीच स्थानीय संस्कृतियों, पारिस्थितिक तंत्र और संरक्षण प्रयासों की अधिक समझ को बढ़ावा देता है। सतत पर्यटन प्रथाएँ यह सुनिश्चित करती हैं, कि पर्यटन के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक लाभ स्थानीय समुदायों के बीच समान रूप से वितरित किए जाएं जबकि पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव को कम से काम किया जाए।

संरक्षण का प्रभाव :– पारिस्थितिकी पर्यटन संरक्षण प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है जैसे पार्क, स्कूल और निर्देशित पर्यटन सहित इकोटूरिज्म से उत्पन्न राजस्व अक्सर संरक्षण परियोजनाओं के वित्तपोषण और प्राकृतिक क्षेत्र की सुरक्षा में सीधे जाता है। इकोटूरिस्ट, जो आमतौर पर पर्यावरण के प्रति जागरूक होते हैं, जब वह प्राकृतिक तंत्र की सुंदरता और मूल्य को प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं, तो संरक्षण के समर्थक बन जाते हैं। वे अक्सर उन नीतियों और पहलुओं का समर्थन करते हैं जो इन क्षेत्रों की रक्षा करती है। इको टूरिज्म की उपस्थिति अवैध शिकार व वनों की कटाई जैसे अवैध गतिविधियों के लिए निवारक के रूप में कार्य कर सकती है, क्योंकि वे संरक्षित क्षेत्र की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं और कानून परिवर्तन

प्रयासों को बढ़ावा देते हैं। जिम्मेदार इकोटूरिज्म संचालक अपशिष्ट में कमी और नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग जैसी संसाधनी प्रयासों को लागू करते हैं जो उनके पारिस्थितिकी पहचान को काम करते हैं और दूसरों के लिए एक उदाहरण स्थापित करते हैं।

जिम्मेदार पर्यटकों की भूमिका :– यात्रा की योजना बनाते समय पर्यटकों को ऐसे टूर ऑपरेटर और आवास को चुनना चाहिए जो स्थिर पर्यावरण संरक्षण व स्थानीय समुदाय की भागीदारी को प्राथमिकता देता हो। किसी गंतव्य पर जाने से पहले स्थानीय रीति–रिवाज, परंपराओं और शिष्टाचारों को खुद को परिचित करें। संस्कृति मापदंडों के प्रति सम्मान दिखाएं और इस बात का ध्यान रखें कि आपके व्यवहार से स्थानीय समुदाय को किस प्रकार प्रभावित हो सकता है। पानी की बोतलों और कंटेनरों का उपयोग करके कचरे को कम करें। कचरों का जिम्मेदारी से निपटारा करें, जब भी समय हो रीसायकल करें और स्थानीय कचरा प्रबंधन का सम्मान करें। स्थानीय रूप से बने स्मृति चिन्ह, स्थानीय रेस्तरा में खाएं और स्थानीय कारीगरों और शिल्पकारों से समान खरीदें। ताकि स्थानीय लोग को इससे लाभ हो।

इको टूरिज्म को बढ़ावा देना :– पर्यटन मंत्रालय अपनी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से भारत को समग्र रूप से बढ़ावा दे रहा है। वर्तमान में चल रही योजनाओं के मांग के रूप में उत्तराखंड सहित सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में इको टूरिज्म को बढ़ावा देने का कार्य चल रहा है। पर्यटन मंत्रालय अपनी वेबसाइट व सोशल मीडिया पर प्रचार कार्यक्रमों के माध्यम से नियमित रूप से इकोटूरिज्म को बढ़ावा देता रहता है। पर्यटन मंत्रालय ने देश में पर्यावरण आधारित पर्यटन के विकास को गति प्रदान करने के उद्देश्य से इको टूरिज्म के विकास के लिए एक राष्ट्रीय रणनीति तैयार की है। पर्यटन मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं के तहत इको टूरिज्म गंतव्यों सहित अन्य गंतव्य स्थलों में पर्यटन बुनियादी ढांचे के विकास के लिए विभिन्न राज्य सरकारों केंद्र शासित प्रदेश प्रशासनों को राष्ट्रीय वित्तीय सहायता प्रदान की गई है। मंत्रालय ने अपनी स्वदे ा दर्शन योजना के तहत विषयगत सर्किटो में से एक के रूप में इकोसर्किट की पहचान किन्हे स्वदे ा दर्शन 2.0 योजना पर्यटन और गंतव्य केंद्रित दृष्टिकोण के अलावा टिकाऊ तथा विख्यात गंतव्य स्थल विकसित करने के उद्देश्य से शुरू की गई है। पर्यटन मंत्रालय ने स्वदेश दर्शन में एक थीम के तहत 06 परियोजनाओं को मंजूरी दी है। 27 सितंबर 2021 को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) और रिस्पांसिबल टूरिज्म सोसाइटी ऑफ इंडिया (RTSOI) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं जिसका उद्देश्य एक दूसरे के पर्यटन क्षेत्र में स्थिरता को सक्रिय रूप से बढ़ावा देने और समर्थन देने के उपाय करना तथा जहां तक संभव हो, सहयोगात्मक तरीके से काम करना है। पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने वन्य एवं वन्य जीव क्षेत्र में सतत पारिस्थिकी पर्यटन के लिए दिशा निर्देश 2021 जारी किए हैं। दिशा निर्देश में पारिस्थितिकी पर्यटन योजना तैयार करने का प्रावधान है, जिसमें पारिस्थितिकी पर्यटन स्थल की वहन क्षमता विवरण आदि शामिल है। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के द्वारा इको टूरिज्म के लिए राष्ट्रीय पारिस्थितिकी पर्यटन नीति 2022 लाया गया जिसका उद्देश्य पूरे देश में पारिस्थितिकी रूप से जिम्मेदार टिकाऊ पर्यटन प्रथाओं को बढ़ावा देना है। यह नीति प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण जैव विविधता की रक्षा और पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन पहले के माध्यम से स्थानीय समुदाय की आजीविका का समर्थन करने पर केंद्रित है। यह पर्यटकों और हितधारकों के बीच पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करने का प्रयास करती है। साथ ही पारिस्थितिकी के रूप में संवेदनशील क्षेत्रों में पर्यावरण के अनुकूल बुनियादी ढांचे व गतिविधियों के विकास को प्रोत्साहित करती है।

ओड़िसा में इकोटूरिज्म :– "ओड़ीसा में सामुदायिक प्रबंधित प्राकृति पर्यटन" का उद्देश्य राज्य में वन पर निर्भर समुदायों को वैकल्पिक आजीविका प्रदान करके वन्य और वन्यजीव संरक्षण का समर्थन करना है। राज्य सरकार ने इकोटूरिज्म को मंजूरी दी और वन विभाग को राज्य में इको टूरिज्म के विकास के लिए नोडल

एजेंसी घोषित किया गया है। इकोटूरिज्म के सतत विकास एवं संवर्धन के लिए राज्य सरकार ने वित्तीय वर्ष 2016–17 से 2020–21 तक 5 वर्ष की अवधि के लिए 56 करोड रुपए की वित्तीय लागत के साथ "इकोटूरिज्म का विकास" नामक योजना को मंजूरी दी है। वर्तमान में यह योजना राज्य के वन्य जीव विभाग के द्वारा संचालित की जा रही है। संरक्षित क्षेत्र के बाहर कुछ जिलों में बेहतरीन जगह विकसित की गई है जैसे कि क्योंझर में अंजार, नयागढ़ में सिधमुला, कटक में अंशुपा, जाजपुर में महाविनायक और ओलासुनी बरागढ़ में नृसिंहनाथ, गंजन में पाकीजी हिल, सलूपाली और लालसिंह, मयूरभंज में मंचबांध, जगतसिंहपुर में धालतांगड और ढंकनाल में सप्तसज्य, जहां प्रकृति प्रेमियों को आकर्षित करने के लिए न्यूनतम कैपिंग, ट्रैकिंग और प्राकृति अन्वेषण की सुविधा प्रदान की गई है। इसके अलावा प्राकृतिक टूल्स, वॉच टावर, इंटरप्रिटेशन सेंटर जैसी सुविधाओं के रखरखाव के लिए क्षेत्र में और उसके आसपास रहने वाले स्थानीय समुदायों को शामिल करके रोजगार के अवसर भी पैदा किए गए हैं। वर्ष 2019–20 के दौरान राज्य बजट और (IEMF) से वित्तीय सहायता के साथ राज्य भर में 41 विभिन्न स्थानों पर इकोटूरिज्म गतिविधियों का विकास नए बुनियादी ढांचे का निर्माण मौजूद सुविधाओं और अन्य सुविधाओं का नवीकरण और रखरखाव किया गया है।

झारखंड में इको टूरिज्म : परिवर्तन प्रभाव और अवसर :– प्रकृति की गोद में बसा झारखंड राज्य, जिसे अक्सर जंगलों की भूमि कहा जाता है, प्राकृतिक सुंदरता के बीच सुकून और आध्यात्मिक जुड़ाव की तलाश करने वालों के लिए यह स्वर्ग है। इसकी समृद्ध व प्रचुर प्रकृतिक माव्यता आंगतुकों को प्राकृतिक दुनिया के अजूबे में डूबने के कई अवसर प्रदान करती है। चाहे वह अपने हरे भरे जंगलों में पनप रहे विविध वनस्पतियों और जीवन को देखना हो, कई मनमोहक झरनों को देखना हो, लुभावनी पहाड़ियों के बीच ट्रैकिंग करना हो, अपने प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यानों में विविध प्रकार के वन्य जीव से मिलना हो या अपने प्रसिद्ध मंदिरों के माध्यम से गहन आध्यात्मिक यात्रा पर निकलना हो झारखंड एक अविस्मरणीय व चिंतनशील अनुभव का वादा करता है। पर्यटन को अब एक ऐसी उद्योग के रूप में मान्यता प्राप्त है जो, कई सामाजिक व आर्थिक लाभ उत्पन्न करता है। आर्थिक विकास और स्थानीय रोजगार सृजन के लिए महत्वपूर्ण साधन के रूप में इसका महत्व विशेष रूप से दूर दराज और पिछडें क्षेत्रों में, अब पूरी दुनिया में अच्छी तरह से पहचाना गया है। झारखंड के सामाजिक आर्थिक सुधार के लिए पर्यटन का विकास आवश्यक है। पारंपरिक सामूहिक पर्यटन के विकल्प के रूप में, पारिस्थितिकी पर्यटन सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सतत पर्यटन पारिस्थितिकी पर्यटन का पर्याय है। झारखंड को इससे सीख लेने की और राज्य में पर्यटन को आक्रामक रूप से बढ़ावा देने की आवश्यकता है। प्रभावी स्थिति कई कारकों पर निर्भर करती है जो एक साथ पर्यटक स्थल के आकर्षण को निर्धारित करते हैं। पोजिशनिंग में ग्राहक को मिलने वाले लाभ का वादा करना चाहिए, अपेक्षा पैदा करना चाहिए और ग्राहक की समस्या का समाधान पेश करना चाहिए। पोजिशनिंग के पहले चरण में ऐसे बाजरो का या खण्डों का पहचान करना चाहिए जो व्यावसायिक क्षमता का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह लक्ष्य बाजार की जरूरत इच्छाओं और धारणाओं के साथ गंतव्य द्वारा दिए जाने वाले ग्रामों के लाभों के बारे में पूरी जानकारी पर आधारित होना चाहिए। इको टूरिज्म का मतलब है पर्यावरण को संरक्षित करने व स्थानीय लोगों की भलाई में सुधार करने वाले प्राकृतिक क्षेत्र की जिम्मेदारी से यात्रा करना।

रांची झारखंड की राजधानी और पहले बिहार के ग्रीष्मकल राजधानी रांची में पर्यटकों के लिए बहुत कुछ है। टैगोर हिल की सैर जहां कवि और लेखक रविंद्रनाथ टैगोर के बड़े भाई ज्योति टैगोर ने अपने दिन के कई घंटे चिंतन में बिताए थे, वह सबसे अच्छी जगह है जिसे आप पसंद करेंगे। टैगोर हिल के करीब काके डैम है जहां एक पर्यावरण प्रेमी को जाना चाहिए। मनोरंजन पार्क सहित रॉक गार्डन होने के कारण बांध आपको इसके प्राकृतिक परिवेश में शांतिपूर्ण टहलने देता है। रांची से कुछ दूरी (20 कि.मी.) यात्रा कर ओरमांझी पहुचते है, जहां बिरसा मुंडा जैविक उद्यान स्थित है। झारखंड राज्य झारनो की प्रचुरता के लिए भी जाना जाता है जो राज्य की प्राकृतिक संसाधनों और विरासत का अभिन्न अंग है। जोन्हा फॉल्स, सीता धारा हुडरु फॉल, दशम फॉल पंचघाघ और हिरनी फॉल जैसे लोकप्रिय झरने बहुत ही सुंदर वातावरण में स्थित है जो प्राकृति प्रेमियों के लिए खुशी की बात है।

सारंडा वन लुप्तप्राय सरीसृप, उड़ने वाली छिपकली का घर और इसके कुछ हिस्से इतने घने हैं कि सूरज की रोशनी भी वहां से नहीं गुजार सकती है।

नेतहाट राज्य की राजधानी रांची से 157 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है यह अपनी हरी–भरी झाडियों, पहाड़ियां, राजसी, झरनों और मनमोहक दृश्य के लिए प्रसिद्ध है। यहां का सूर्योदय और सूर्यास्त किसी चल चित्रकला की तरह मंत्र मुक्त कर देने वाले हैं। इस जगह को छोटा नागपुर का रानी कहा जाता है। नेतरहाट आकर यहां रहने वाले आदिवासियों की संस्कृति और जीवन शैली की खूबसूरती को करीब से

देखा जा सकता है। यहां के प्रमुख आकर्षणों में कोयल व्यू प्वाइंट, (सूर्योदय बिंदु), मैगनेलिया पॉइंट (सूर्यास्त बिंदु), लोअर घाघरी और अपर घाघरी, नेतरहाट बाधं, नौकर ाहों की नर्सरी कहे जाने वाले नेतरहाट आवासीय विद्यालय साथ ही देवघर के जंगल के अलावा नाशपाती के बगीचे और झारखंड का सबसे ऊंचा झरना लोध जल प्रपात शामिल है।

निष्कर्ष :– इकोटूरिज्म न केवल पर्यावरण का संरक्षण करता है, बल्कि स्थानीय समुदाय के लिए रोजगार प्रदान कर आर्थिक रूप से मदद करता है इसके सफल कार्यन्वयन के लिए सबको मिलकर एक साथ काम करना चाहिए। जैसे पर्यटकों को यहां के स्थानीय होटल और रेस्तराओं का उपयोग करते हुए वहां के स्थानीय कारीगर और शिल्पकार के हाथों से बने वस्तुओं को क्रय करना चाहिए जिससे उनकी आर्थिक रूप से सहायता मिले और वहां के प्रशसन को राजस्व की प्राप्ति हो सके। इकोटूरिज्म का उद्देश्य केवल यात्रा करना नहीं होता बल्कि यह एक जिम्मेदार और सतत् तरीके से प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण करना है। यह सभी के लिए एक अवसर है कि वह पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियां को समझे और स्थानीय समुदायों के विकास में योगदान दें। इस प्रकार इकोटूरिज्म एक ऐसा विकल्प है जो न केवल पर्यटकों के लिए बल्कि पूरी मानवता के लिए फायदेमंद है। इकोटूरिज्म विश्व के प्राकृतिक व सांस्कृतिक विरासत को देखने का एक समृद्ध और टिकाऊ तरीका प्रदान करता है। इको टूरिज्म को समझकर और इसके सिद्धांतों को क्रियान्वित करके यात्री अनूठे अनुभव का आनंद ले सकते हैं तथा पर्यावरण और स्थानीय समुदायों के लिए सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। इको टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए सरकार को जगह चिन्हित कर स्पष्ट नीतियों व नियम बनाने चाहिए। डिजिटल प्लेटफार्म व सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को इको टूरिज्म के प्रति जागरूक करना चाहिए।

संदर्भ :–

- https://www.worldpackers.com.
- https://www.ecoatm.com.
- Pib-gov.in.
- www.ecotourism.org.
- https://www.ecotarodisha-com
- https://tourism.
- Jharkhand.gov.in.
- https://images.app.goo.gl/6P6hu577KW9XyF7D9.
- https://images.app.goo.gl/93CMVPocUqdd3HVn8.